mention of the suffix *aṇ* अण्ग्रहणानर्थक्यं च कच्छादिभ्योऽण्विधानादिति वार्त्तिकात् LaS'abdeS'e. ii. 256. 11.

अण्ग्रहणानुवृत्ति (aṇgrahaṇānuvṛtti) *f.* continuity of taking into account the Pratyāhāra *aṇ* in the following rules तपरसूत्रेऽप्रत्ययग्रहणानुवृत्तावण्ग्रहणानुवृत्तौ च मानाभावात् LaS'abdeS'e. i. 316. 11; ii. 563. 17.

अण्ग्रहणाभाव (aṇgrahaṇābhāva) *m.* absence of mention of the Pratyāhāra *aṇ* उरण्रपर इति सूत्रेऽण्ग्रहणाभावे ऊ रपर इति भाष्यप्रयोगविरोधाच्च LaS'abdeS'e. i. 263. 5.

अण्टदुव (aṇṭaduva) *m.* name of a tank सत्प्रसादाण्टदुवतटाकस्योत्तरशृङ्गस्याधस्तात् EI. xii. 53. 58.

अण्ठ् (aṇṭh-) I. Ā. [AltGr. I. 169] to go, to move अठि गतौ । ··· आनण्ठे DhātuPra. I. 258 (26. 13); अण्ठते DhātuVṛ. I. 263; KośaKaTa. 2. 1276 [*aṇṭhati* 'to visit' (Buddhistic) AltGr. I. 167]

अण्ठित (aṇṭh-ita) *adj.* possessed of, having दाहपाकरुगन्विते (v. l. रुगण्ठिते (Calcutta Ed. 1836)) । गुल्मे रक्तं जलौकोभिः ··· हरेत् SuśruS. vi. 42. 52 [gone; rained, APTE]

अण्ड (aṇḍá) *m. n.* [MAYR. 1. 26; 547; 3. 626; अमन्ताड्डः Uṇā. 1. 113 अमन्ति संप्रयोगं यान्त्यनेनेत्यण्डः प्राण्यङ्गावयवः Ujjvaladatta; SiddhāKau. 524B. 1; but a *nipātana* in SaraKaṇṭhā.(Gr.) ii. 2. 117] **1 A** testicle **B** sperm, semen **C** scrotum **2 A** egg, (golden) cosmic egg **B** world, universe, hemisphere **C** one of the four spheres into which the cosmos is divided **D** musk-bag **E** individual **3** name of S'iva **4** name of a country **5** cupola, dome **6** sword with white and long irregular spots **7** bowl of an ascetic **8** mystic syllable **9** a kind of corn **10** emmediate envelope **11** musk [part of a *stūpa*] **1 A** testicle अ॒ण्डाभ्या॒ᳲ स्वाहा॑ TaiS. VII. iii. 16. 2; अथ ये द्वे स्तोत्र्येऽतिरिच्येते आण्डावेव (v. l. अण्डावेव) तावतिरिच्येते JaimiBr. 2. 434; काण्डाण्डादीरः (अण्डीरः) JaineVyā. iv. 1. 37 (250. 23); काण्डाण्डादीरच् CāndraVyā. iv. 2. 115; स्तनावण्डौ च पुंस्त्वं च षड्ढोतापान एव च LakṣmīT. 29. 21; आकृष्टे च चूर्णिताण्डद्वयः पञ्चत्वमुपगतः Hitopa. 51. 2; लिङ्गं हस्तप्रमाणं तथाण्डौ चतुरङ्गुलौ YuktiKa. 183. 2 = AśvaCi. 6. 9; यैर्याति कुत्सितं रक्तं सर्वदेहसमुद्भवम् । ··· अण्डयोरश्वपादेषु YuktiKa. 192. 7; 192. 19; 201. 28; नापितः शल्यहर्तार्यं नृणां येनोपजीविना । नीतान्यण्डानि दुर्लेपैः स्थूलस्थालीप्रमाणताम् NarmaMā. 3. 61; AśvaCi. 11. 3; 4; तत्र कूजत्यधो नाभेर्गुदवस्त्यण्डमाश्रितः AśvaVai. 3. 133; 3. 146; यदण्डं कम्पतेऽश्वस्य तेन पादेन खञ्जति AśvaVai. 50. 4; 50. 27; साण्डं अण्डाभ्यां युक्तं अक्लीबमित्यर्थः ViraMi. (Sāṁskāra.) 998. 22–23; **1 B** sperm, semen केषांचित् पुत्रकामानामनुसंतानमिच्छताम् । सिद्धौ प्रयतमानानां नैवाण्डमुपजायते MahāBhā. xii. 318. 16; अण्डम् ··· स्यान्मुष्के वीर्येऽपि च क्वचित् ViśvaPra. 43. 7; अण्डं स्यान्मुष्कवीर्ययोः ViśvaLoK. 90. 1; KośaKaTa. 2. 4696; तथा वीर्ये चाण्डम् Comm. *on* TrikāS'e. iii. 3. 110; कठिनब्रह्मकोशवीर्येष्वपि ··· क्षीणाण्डस्य कुतः सुतः Comm. *on* AnekāSaṁ. 2. 108; **1 C** scrotum मुष्कोऽण्डमण्डकोशश्च वृषणो बीजपेशिका RājNi. 399. 4; स्यादण्डं पेलमण्डकः । मुष्कोऽण्डकोशो वृषणः Abhidhā-Cin. 611; perhaps also मुष्कोऽण्डं वृषणो कोशः AbhidhāRaMā. 2. 368; अस्त्रियो मुष्ककोशाण्डा: Vaija. 178. 63; [PW wrongly in प्राण्यङ्गकोषयोरण्डम् TrikāS'e. iii. 3. 110 (*but* comm. प्राण्यङ्गं पुंसोऽङ्गावयवः । कोषः पक्षिडिम्बः तयोः)]; **2 A** egg, (golden) cosmic egg [mentioned in the *pakṣādigaṇa*, GaṇPā. 132. 5; GaṇRa. 4. 278 (323)] स यथाण्डं प्रथमनिर्भिण्णमेवमेव JaimiUBr. iii. 14. 8; यश्चतुर्थस्तं पितरो ये चाण्डेषु शेरते (ते उपजीवन्ति) SāmaViBr. i. 1. 8 (Sāy. सर्वेषु ब्रह्माण्डेषु); तमभ्यतपत्तस्याभितप्तस्य मुखं निरभिद्यत यथाण्डम् AitĀr. II. iv. 1. 6; अग्निना पिहितः सहस्राक्षेण हिरण्मयेनाण्डेन MaiU. 6. 8; बृहदण्डमभूदेकम् MahāBhā. i. 1. 27; कालेन महता कद्रूरण्डानां दशतीर्दश । जनयामास MahāBhā. i. 14. 12; अण्डानि बिभ्रति स्वानि न भिन्दन्ति पिपीलिकाः MahāBhā. i. 68. 54; ii. 38. 33; iii. 133. 26; हिरण्यवर्णमभवत्तदण्डमुदकेशयम् HariVaṁ. 1. 25; धार्तराष्ट्रचकोराणाम् ··· चटकानां च यानि स्युरण्डानि च हितानि च CaraS. i. 27. 82 (1922 Ed.); iv. 3. 16 (1941 Ed.); कुलीरकूर्मनक्राणामण्डान्येवं तु भक्षयेत् SuśruS. iv. 26. 26; तदण्डमभवद्धैमं सहस्रांशुसमप्रभम् ManuS. 1. 9; तैजसेभ्योऽणुभ्यो ··· महदण्डमारभ्यते PadārthaSaṁ. 49. 9; JayāS. 13. 190; ततो हरिः । तैः सर्वैरण्डमुत्पाद्य तस्मिन् ब्रह्माणमासृजत् AhirbuS. 41. 6; येनेदमावृतं सर्वमण्डमप्सु प्रलीयते ViṣṇuP. vi. 4. 31; i. 2. 54; MārkP. 45. 62; VāyuP. i. 1. 44; MatsyaP. 2. 29; नारायणा(? णः)त्परोऽव्यक्तादण्डमव्यक्तसंज्ञितम् BrahmāṇḍP. i. 5. 109; i. 1. 43; i. 3. 36; BṛSaṁ. 1. 6; मध्ये समन्तादण्डस्य भूगोलो व्योम्नि तिष्ठति SūrySi. 12. 32; 12. 14; PañcT. 1. 127 (33); तण्डुलीयकमूलानि कुक्कुटाण्डमवल्गुजम् । नावनाञ्जनपानेषु योजयेद्विषशान्तये AṣṭāHṛ. i. 7. 25; AvantiSuKa. 65. 6; VāsaDa. 191. 2; AṣṭāSaṁ. i. 35. 19 (1. 7); PāraS. 6. 59; PāñcaRā.(Ha.) i. 1. 14; आकाशादिक्रमेण अण्डमुत्पाद्य अम्भःप्रभृतीन् लोकानसृजत AitUBh. 252. 1 (*on* 1. 2); ChāndoUBh. 197. 17 (*on* iii. 19. 1); 296. 12 (*on* v. 10. 2); 352. 10 (*on* vi. 3. 1); BṛĀraUBh. 22. 16 (*on* i. 2. 2); 26. 13 (*on* i. 2. 4); SarvaVeSiSaṁ. 435; BṛĀraUBhVā. i. 2. 151; i. 2. 178; Kapphiṇā. 11. 2; आशि(? सी)त् कोट्याश्रममहातपोवनात् मायूराण्डं भित्वा गणदण्डवीरभद्राख्यः ··· नृपतिः EI. xxv. 155. 4; अण्डस्यापि बहिर्योऽयं तस्य बुद्धिर्बहिः स्थिता ParaS. 26. 63; LakṣmīT. 5. 81; खादेत् क्षुधार्ता भुजगी स्वमण्डम् Hitopa. 4. 58; 2. 138 (3); मक्षिकागर्भसंभूतबालाण्डपरिपीडनात् । जातं मधु कथं सन्तः सेवन्ते कललाकृति YaśasCam. ii. 330. 13; तैजसेभ्यः परमाणुभ्यः पार्थिवपरमाणुसहितेभ्यो महदण्डं महद्डिम्बमारभ्यते NyāyKa. 52. 25; 34. 17; BrahmSūBh.(Bhā.) 65. 14 (*on* i. 3. 30); वर्षपूगसहस्रान्ते तदण्डमुदकेशयम् BhāgP. ii. 5. 34; ii. 10. 10; xi. 3. 39; KūrmaP. 45. 2 (1. 4); AgniP. 59. 9; SkandP. iv. 51. 12; v(1). 2. 6; VāmaP. 43. 17; ViṣṇuDhaP. ii. 112. 3; VarāP. 7. 39; EI. xviii. 33. 53; अण्डोद्भवत्वं शर्वस्य रजोगुणसमाश्रयात् LiṅgaP. i. 2. 6; i. 3. 28; BrahmP. 1. 39; 232. 30; मार्तस्त्वं भव चाण्डस्तु मार्तण्डस्तेन स स्मृतः BhaviP. 131B. 3 (1. 79. 22); 70A. 2 (i. 33. 13); PadmP. i. 2. 26; vi. 81. 66; KalkiP. iii. 1. 32; YogVā. iii. 13. 34; TātpaT.(Vā.) 403. 1 (*on* ii. 1. 37); अण्डस्य हिरण्मयत्वं विवक्षितम् Kiraṇā. 95. 7; अण्डे किल समुत्पन्ना वारणाः पौर्वकालिकाः Hastyāyur. 16. 21; 16. 22; 16. 23; 16. 24; ĪśānS'iPa. i. 39. 16; BrahmaSūBh.(S'rī.) ii. 184. 9 (*on* ii. 4. 17); तदण्डभाण्डखण्डाभ्यां द्यां भुवं विदधे धिया । ब्र(ब्र)ह्मा EI. i. 140. 4; सूते बहून्यण्डानि लाविका Mānaso. iv. 8. 1196; अण्डं पक्ष्यादिप्रसवः GaṇRa. 2. 63 (100); बहुष्वण्डेषु जातेषु यथैकाण्ड एवावशिष्यते तदैकाण्डता शुभाय भवति AdbhuSāg. 697. 20; Rasārṇa. 10. 14; AbhinDa. 137; ब्रह्माण्डमण्डादभूद्विश्वम् SaduktiKa. 236. 6; SaṁgīRa. i. 29. 7 (1. 2. 17); RasRaSa. 1. 83; यथाण्डेऽन्तर्महासर्पो जगदस्ति तथात्मनि PañcDa. 13. 17; 13. 91; S'ārṅgaPa. 1165; Dhūrtā. 103; HaṁsSaṁ. 23; VedāntKau. 252. 10 (*on* ii. 4. 19); VedāntSā.(Sa.) 15. 11; कैलासमानससरोवरराजहंस्या निःक्षिप्तमण्डमिव जाग्रति पुण्डरीके Subhāṣi. 1503; MātaLī. 11. 5; S'ivārkaMaDī. i. 233. 24 (*on* i. 1. 17); त्वम् ··· हैरण्यमण्डं व्यधाः Nārāy. ii. 5. 9; S'aktiSaṁT. i. 2. 57; SiddhāTa. 10. 3; CitraPaC. 108; अण्डं नाम कपित्थफलाकारं पञ्चीकृतपञ्चमहाभूतारब्धं प्राकृतद्रव्यम् YatīndraDī. 47. 7; GoviBh. 54. 2 (*on* i. 3. 30); 303. 9 (*on* iv. 2. 16); फेनाद् बुद्बुदो भवति । बुद्बुदादण्डो भवति । अण्डादात्मा भवति BālaṁBha. i. 105. 25 (*on* 1. 24); **2 B** world, universe (= Brahmāṇḍa), hemisphere अण्डानां ब्रह्माण्डानाम् LalitāTriBh. 276. 14 (*on* 11); 281. 19 (*on* 15); कपालमर्बुदं स्थैल्याद् ब्रह्मणोऽण्डस्य योजनैः MṛgendraT. i. 13. 9; स्फुटमिव मातुमशेषमण्डमूर्ध्वम् । ··· कराः शितांशोर्द्रुतमुद्दहासत HarVi. 28. 8; कमलमनयदुन्मुखत्वमर्कः स्फुटदलमण्डलसच्छिद्रयासु दीप्त्या HarVi. 28. 46 (comm. अण्डे ब्रह्माण्डे लसन्ती); 46. 45; प्रलयशिखिनि यश्च कोटिकृत्वः स्मरति विलीनमिदं विधातुरण्डम् RāmC. 6. 63; 32. 85; YaśasCam. i. 483. 3; अण्डानामीदृशानान्तु कोट्यो ज्ञेयाः सहस्रशः KūrmaP. 426. 15 (1. 50); धारयन्ति यथा विश्वमण्डस्याभ्यन्तरे स्थिताः । वाय्वग्निसोमाः सततम् ViṣṇuDhaP. ii. 142. 4; SkandP. ii(9). 18. 10; NyāyKuA. i. 138. 6; अण्डानां कोटयश्चैव विश्वमूर्तेस्तनौ तदा LiṅgaP. i. 36. 60; i. 2. 18; द्यावापृथिव्योरूर्ध्वलोकांस्तथाधश्चाण्डादस्तत्त्वं विभागं चकार PadmP. v. 40. 10; v. 2. 22; BrahmP. 20. 98–99; त्रिवृत्कृतैस्तेजोऽबन्नैरण्डमुत्पाद्य पश्चाच्चतुर्मुखसृष्टेः VedāntSā.(Rā.) 232. 6 (*on* ii. 4. 17); TattvSaṁkhyā. 50. 7; शुष्यत्त्वण्डमपीदमम्बुजभुवो मन्त्रा भवेयुर्न चेत् SaduktiKa. 202. 20; 'रोमकूपेष्वनन्तानि ब्रह्माण्डानि भ्रमन्ति ते' इत्यादिवचनैरण्डानामनन्तत्वेन S'rutaPra. iA. 198. 25 (*on* i. 1. 1); विश्वाख्ये पार्थिवे चाण्डे प्राणिनो भूतमूर्तयः BhāvPra.(S'ā.) 182. 13(7); PañcDa. 1. 28; EI. i. 192. 4; BṛBrahmS. iii. 1. 173; अण्डं नाम कियत्त्रिविक्रमपदैराक्रान्तमेतत्त्रिभिः AdbhuDa. 10. 31; मध्ये समन्तादण्डस्य भूगोलो व्योम्नि तिष्ठति SiddhāTaVi. 27. 3; GoviBh. 310. 16 (*on* iv. 3. 10); भाण्डेऽण्डे विपुल उदेति बुद्बुदाली तारावल्यथखरकरोऽपि मण्डपिण्डः Manmatho. 1. 20 (425. 3); **2 C** (Trika) one of the four spheres into which the cosmos is divided (each consisting of a number of *bhuvanas* (worlds)) अण्डं च नाम भुवनविभागस्थितिकारणम् । प्राह्वरावर्णं तच्च शक्त्यन्तं यावदस्ति हि Tantrālo. 11. 12; पार्थिवं प्राकृतं चैव मायीयं शाक्तमेव च । इति संक्षेपतः प्रोक्तमेतदण्डचतुष्टयम् Tantrālo. 11. 8 (comm.); पृथिव्यादिशक्तीनाम् अत्र अवस्थानेन शक्तितत्त्वे यावत् परस्पर्शो विद्यते स्पर्शस्य च सप्रतिघत्वमिति तावति युक्तम् अण्डत्वम् TantraSā.(A.) 110. 5(10); **2 D** musk-bag of musk-deer (having the shape of an egg) कस्तूरिकामृगाणामण्डाद्गन्धगुणमखिलमादाय । यदि पुनरहं विधिः स्यां खलजिह्वायां निवेशयिष्यामि Kuval. 126; **2 E** individual पुरुषः जीवाख्यः अण्डः BhāsK. ii. 287. 11 (*on* iv.